

पंडिताऊ वि. (देश.) पंडित जैसा, पंडित के ढंग का।

पंडितिमा स्त्री. (तत्.) पांडित्य, विद्वत्ता।

पंडु वि. (तत्.) 1. पीला 2. पीलेपन से मिश्रित मटमैला, कत्थई रंग का 2. श्वेत, सफेद।

पंडुक पुं. (तत्.) कबूतर की जाति का-एक हल्के कत्थई रंग का पक्षी।

पंडुर पुं. (तत्.) 1. पीलापन 2. सफेदी 3. पानी में रहने वाला सर्प।

पंडूक पुं. (तत्.) पंगु मनुष्य, हिजड़ा, पंडू।

पंडोह पुं. (देश.) पनाला, परनाला।

पंतीजना क्रि.सं. (देश.) कपास के बिनौले निकालकर अलग करना, कपास ओटकर रुई और बिनौले अलग करना, कपास ओटना या उसे पींजना।

पंतीजी स्त्री. (देश.) रुई धुनने की धुनकी।

पंथ पुं. (तद्.) 1. रीति, राह, धर्म, मार्ग, रास्ता 2. धर्म, संप्रदाय, धर्म मार्ग मुहा. पंथ दिखाना- राह दिखाना, मार्ग प्रशस्त करना, शिक्षा देना; पंथ निहारना- राह देखना, प्रतीक्षा करना; पंथ गहना- रास्ता पकड़ना, बताए हुए मार्ग पर चल पड़ना।

पंथक वि. (तत्.) मार्ग में उत्पन्न, मार्ग में पैदा होने वाला।

पंथकी पुं. (तत्.) यात्री, मुसाफिर, पथिक, राही।

पंथान पुं. (तत्.) रास्ता, मार्ग, पथ, पंथ।

पंथी पुं. (तद्.) 1. राही, पथिक, बटोही, यात्री 2. किसी मत या संप्रदाय को मानने वाला व्यक्ति। अनुयायी जैसे- कबीर पंथी, दादूपंथी, वामपंथी।

पंद स्त्री. (फा.) सीख, सलाह, नसीहत, शिक्षा, उपदेश, हितकारी अच्छी बात का सान।

पंदरह पुं. (फा.) दस और पाँच को जोड़कर बनने वाली संख्या (15) पंद्रह।

पंदरहवाँ वि. (फा.) पंद्रह का क्रमसूचक रूप, जैसे- पंदरहवाँ अध्याय।

पंदार वि. (फा.) शिक्षा ग्रहण करने वाला, सुझाव देने वाला, पंदआमोज, पुं. सीखने वाला व्यक्ति, नसीहत देने वाला व्यक्ति।

पंद्रह पुं. (तत्.) दे. पंदरह।

पंद्रहवाँ वि. (तद्.) दे. पंदरहवाँ।

पंप पुं. (अं.) 1. बिजली से चलने वाला एक उपकरण जिससे पानी या अन्य तरल पदार्थों को खींचा जाता है या ऊपर पहुँचाया जाता है 2. हवा भरने वाला एक यंत्र 3. पिचकारी 4. एक विशेष प्रकार का हल्का जूता जिसमें पंजे का भाग खुला रहता है, पंपशू।

पंपा स्त्री. (तत्.) ऋष्यमूक पर्वत के समीप स्थित दक्षिण की एक नदी 2. पंपा नदी 3. पंपा नगर के पास स्थित एक झील (सरोवर) 'पंपासर', इसका उल्लेख रामायण और महाभारत में मिलता है।

पंपाल वि. (तत्.) पापी, पाप करने वाला, बुरे कर्म करने वाला, कुकर्मी।

पंबा पुं. (फा.) ऊन रँगने के लिए काम में आने वाला एक प्रकार का पीला रंग।

पंमार पुं. (तद्.) पँवार 1. क्षत्रियों की एक जाति 2. राजपूतों का एक भेद या उपजाति (गोत्र जिसे 'परमार' कहते हैं)।

पंरूह (पंकरूह) वि. (तद्.) कीचड़ से उत्पन्न होने वाला।

पंवरी पुं. (देश.) झ्यौढ़ी, खड़ाऊँ।

पंसारी पुं. (तद्.) दाल, नमक, मसाले, जड़ी बूटी आदि का बिक्रेता बनिया 2. दिन प्रतिदिन उपयोग में आने वाली गृहस्थ जीवन की वस्तुएँ बेचने वाला व्यक्ति।

पंसेरी स्त्री. (देश.) 1. पाँच सेर की तोल का बाट 2. पाँच सेर की तोल।

पँवरि स्त्री. (देश.) 1. प्रवेश द्वार या फाटक जहाँ से होकर ही मकान या घर में भीतर जाया जा सके।